दूर करें तथा इसके पश्चात् समाज की रुचियों के अनुसार सुधार की ओर बढ़ें जिससे समाज में सामाजिक परिवर्तन के प्रति विश्वास हो जाये।

शिक्षा तथा सामाजिक परिवर्तन
(Education and Social Change)

SEM-ISc-102
29.04.21

शिक्षा समाज की आवश्यकताओं को पूरा करती है तथा ऐसे विचारों का प्रसार करती है जिनके द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहें। दूसरे शब्दों में, शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसकी सहायता से समाज अपने बालकों को वैसा ही बना लेता है जैसा कि वह उन्हें बनाना चाहता है। इसीलिए प्रत्येक समाज अपनी-अपनी आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से हम निम्नलिखित पंक्तियों में शिक्षा के कार्यों पर प्रकाश डाल रहे हैं—

(1) **शाश्वत मूल्यों को स्थायी करना**—समाज में कुछ शाश्वत मूल्य होते हैं। इन स्थायी मूल्यों के बल पर समाज स्थायित्व प्राप्त करता है। **राल्फ लिन्टन** ने इस सिद्धान्त पर प्रकाश डालते हुए बताया है कि जब कभी सामाजिक परिवर्तन के कारण उक्त सामाजिक मूल्यों में दुर्बलता आने लगती है तो समाज पतन की ओर अग्रसर होने लगता है। ऐसे समय पर शिक्षा इन शाश्वत मूल्यों की रक्षा करती है, इन्हें सामाजिक परिवर्तन के बुरे प्रभावों से बचाती है तथा लोगों को इनके सम्बन्ध में इस प्रकार से ज्ञान देती है कि उनका इन मूल्यों में विश्वास भी बना रहे और वे सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार भी करते रहें। हमारे समाज में सत्य, अहिंसा, सहानुभूति, सहिष्णुता, सहयोग तथा सौहार्द आदि अनेक शाश्वत मूल्य पाये जाते हैं। शिक्षा इन सभी मूल्यों की रक्षा करे तथा इन्हें प्रत्येक बालक में विकसित करे।

(2) **परिवर्तन ग्रहण कराने में सहायता**—शिक्षा समाज में भौतिक अथवा अभौतिक प्रविधियों का प्रचार एवं प्रसार करती है तथा लोगों को मानसिक रूप से तैयार करके ऐसे वातावरण का निर्माण करती है कि लोग वांछित परिवर्तनों को सरलतापूर्वक ग्रहण कर लें। ध्यान देने की बात है कि जब तक समाज को किसी प्रविधि से होने वाले लाभों का स्पष्ट ज्ञान नहीं होगा तब तक इसका समीकरण नहीं हो सकेगा। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए उपयुक्त वातावरण उपस्थित करके इस महान् कार्य को पूरा करती है।

(3) **परिवर्तनों की समीक्षा**—समाज में अनेक परिवर्तन होते हैं। इन सभी परिवर्तनों के विषय में शिक्षक वर्ग समीक्षा द्वारा यह निश्चित करता है कि कौन सा परिवर्तन कैसा है अर्थात् वांछनीय अथवा अवांछनीय। दूसरे शब्दों में, शिक्षा ऐसे मूल्यों को निश्चित करती है जिनके आधार पर परिवर्तनों की समीक्षा करके वांछित परिवर्तनों को प्रोत्साहित